

जय साईं

जय जय सीयाराम

श्रीकोकिल साईं के प्रति श्रीस्वामी अखण्डानन्द
सरस्वती का वृन्दावन से हरिद्वार को
प्रेम पत्र-

प्रिय गेहीराम

वृन्दावन १०-०७-४६

हम लोग सकुशल बीस दिन में यहाँ पहुँचे । रास्ते में मेरठ, हापुड़, बुलन्दशहर एवं खुरजे में ठहरे । बहुत आनन्द रहा । यहाँ श्री महाराज जी आ गये हैं । वे तुम लोगों की बहुत याद करते हैं । कल कह रहे थे कि सिन्धी साईं जल्दी ही आवेंगे । अब क्यों देर करेंगे । भैया, उनका मन वहाँ नहीं लगेगा । रामकिंकर महाशय यहाँ आ गये । तुम लोगों की तारीफ करते हैं ।

अपने आशीष प्रिय साईं को, मिठले बाबल साईं को, मीठी-मीठी मैया को मेरी याद दिलाना । तुम लोगों के बिना यहाँ मेरे लिये कोई आने-जाने की जगह ही नहीं है, जहाँ जाकर दिमाग को थोड़ा विश्राम दूं ? श्रावण आ रहा है, झूला कहाँ पड़ेगा ? तुम्हारी गली की ओर अभी मैं नहीं गया । उस सूनी-सूनी गली में क्या रखा है ?

आज से यहाँ रास प्रारम्भ हो गया । श्रीरामकिंकर जी राम-रस के द्वारा यहाँ की मिठास में और वृद्धि कर देते हैं । मैं वेणु गीत सुनाता हूँ । बड़ा आनन्द है । तीन दिन से सूर्य के दर्शन नहीं हुए । ठण्डी, मन्द सुगन्ध वायु चल रही है । तुम लोग वहाँ कैसे पड़े हो ? यहाँ आने को मन नहीं मचलता ?

तुम्हारा-अखण्डानन्द सरस्वती

श्री हरिः

मिठले बाबल साईं की

सदाई जय हो

मैगसि सदा खुशी

श्रीवृन्दावन विहारीलाल की जय हो

श्रीअवध सरकार जी जय हो, जय हो

—*—

प्रिय गेही रामजी,

सोलन

तुम्हारा पत्र मिला । बाबल साईं और मीठी मैया का समाचार जानकर खुशी हुई । मेरा मन श्रीवृन्दावन धाम में ही है । यहाँ क्षणभर के लिये आता भी है तो नहीं लगता है । ऊँचे-ऊँचे हरे-भरे पर्वत शिखर अभिमान से शिर ऊपर उठाये हुए हैं । ठण्डी-ठण्डी हवा आकर शरीर को गुद गुदाती है और मन को बाहर खींचती है । वृक्ष, लताएँ, पुष्प, फल, निर्झर पक्षियों की चहक सब कुछ है; परन्तु वृन्दावन नहीं है । जब दादा गाता है— ‘कितै दिन बिन वृन्दावन खोए’ । तब प्राण व्याकुल हो उठते हैं कि चाहे कितनी भी गर्मी हो, सब सह लेंगे अभी वृन्दावन चले चलो । कितनी ही बार मैं गुन गुनाता हूँ— ‘हम ब्रज सुखी ब्रज के जीव । प्रान तन मन नैन सर्वस राधिका को पीव ।’

अब मन वृन्दावन में ही रहता है । शरीर यहाँ बहुत नहीं रह सकता । हम लोग यहाँ से ३० जून शुक्रवार को रवाना होकर वृन्दावन पहुँच जायेंगे । बरसाति पड़े या नहीं, हम तो वहीं आवेंगे ।

तुम्हारा-अखण्डानन्द